Students now we are starting  class seventh chapter number 1 Hum Panchi Unmukt Gagan Ke .

Kindly note down the following question answers in a copy if you have or in any old copy or pages.

# 1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

❐

## प्रश्न-अभ्यास

### कविता से

1. हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?
2. पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?
3. भाव स्पष्ट कीजिए–
   या तो क्षितिज मिलन बन जाता / या तनती साँसों की डोरी।

### कविता से आगे

1. बहुत से लोग पक्षी पालते हैं–
   (क) पक्षियों को पालना उचित है अथवा नहीं? अपने विचार लिखिए।
   (ख) क्या आपने या आपकी जानकारी में किसी ने कभी कोई पक्षी पाला है? उसकी देखरेख किस प्रकार की जाती होगी, लिखिए।

2. पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आज़ादी का हनन ही नहीं होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है। इस विषय पर दस पंक्तियों में अपने विचार लिखिए।

## अनुमान और कल्पना

1. क्या आपको लगता है कि मानव की वर्तमान जीवन-शैली और शहरीकरण से जुड़ी योजनाएँ पक्षियों के लिए घातक हैं? पक्षियों से रहित वातावरण में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन समस्याओं से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए? उक्त विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. यदि आपके घर के किसी स्थान पर किसी पक्षी ने अपना आवास बनाया है और किसी कारणवश आपको अपना घर बदलना पड़ रहा है तो आप उस पक्षी के लिए किस तरह के प्रबंध करना आवश्यक समझेंगे? लिखिए।

## भाषा की बात

1. स्वर्ण-शृंखला और लाल किरण-सी में रेखांकित शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। कविता से ढूँढ़कर इस प्रकार के तीन और उदाहरण लिखिए।
2. 'भूखे-प्यासे' में द्वंद्व समास है। इन दोनों शब्दों के बीच लगे चिह्न को सामासिक चिह्न (-) कहते हैं। इस चिह्न से 'और' का संकेत मिलता है, जैसे– भूखे-प्यासे=भूखे और प्यासे।
   - इस प्रकार के दस अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

# कविता का सारांश

कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' कविता में पक्षियों के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाया गया है। कविता के माध्यम से पक्षी कह रहे हैं कि हम खुले आकाश में विचरण करते हैं। यदि हमें पिंजड़े में बंद कर दिया गया तो हम अपना मधुर गीत नहीं सुना पाएँगे। पिंजड़ा भले ही सोने का क्यों न हो, खुशी में फड़फड़ाते हमारे पंख उससे टकरा कर टूट जाएँगे, इसलिए पिंजड़े में बंदी जीवन हमारे लिए महत्त्वहीन है। हम नदियों और झरनों का बहता जल पीने वाले हैं, पिंजड़े के अंदर न तो हमारी भूख मिटेगी और न प्यास। हमें आज़ाद रह कर कड़वी निबौरी खाना अधिक पसंद है क्योंकि वह चाहे कितनी भी कड़वी हो पर गुलामी में रहकर सोने की कटोरी का मैदा खाने से अच्छी ही है। सोने के पिंजड़े में बंद रह कर हम अपनी गति और उड़ान सब भूल गए हैं। वृक्ष की ऊँची डालियों पर झूला झूलना अब एक सपना बन कर रह गया है हमारी इच्छा थी कि हम उड़ते हुए नीले आकाश की सीमा तक पहुँच जाएँगे और सूरज की किरणों जैसी अपनी लाल चोंच से तारों जैसे अनार के दाने चुगेंगे। अगर हम आज़ाद रहेंगे तो इस सीमाहीन क्षितिज से हमारी उड़ान की प्रतिस्पर्धा होगी और या तो हम आकाश की सीमा तक पहुँच जाएँगे या उड़ते-उड़ते ही अपने प्राण त्याग देंगे। अंत में पक्षी मनुष्य से विनयपूर्वक कहते हैं कि भले ही हमारा घोंसला नष्ट कर डालो और टहनी का हमारा ठिकाना भी तोड़ दो लेकिन जब ईश्वर ने हमें पंख दिए हैं तो हमारी उड़ान में व्यवधान मत डालो। यह उड़ान ही हमारा जीवन है। उड़ने की आज़ादी छीनकर हमसे हमारा जीवन मत छीनो।

## सप्रसंग व्याख्या

*हम पंछी उन्मुक्त गगन के*
*पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,*
*कनक-तीलियों से टकराकर*
*पुलकित पंख टूट जाएँगे।*
*हम बहता जल पीनेवाले*
*मर जाएँगे भूखे-प्यासे,*
*कहीं भली है कटुक निबौरी*
*कनक-कटोरी की मैदा से।* (पृष्ठ संख्या-1)

**शब्दार्थ**–***पंक्षी***–चिड़िया। ***उन्मुक्त***–खुला। ***गगन***–आकाश। ***पिंजरबद्ध***–पिंजड़े में बँधे हुए। ***कनक-तीलियाँ***–सोने की सलाखें। ***पुलकित***–खुशी से फड़कते। ***कटुक***–कड़वी। ***निबौरी***–नीम का फल। ***कनक***–सोना।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' नामक कविता से उद्धृत हैं। इनमें पक्षियों के माध्यम से गुलामी की अपेक्षा आज़ादी के महत्व को दर्शाया गया है।

**व्याख्या**–पक्षी खुले आकाश में विचरण करते हैं। यह उनका स्वभाव है तथा उनकी स्वाभाविक विशेषता भी है। यदि उन्हें पिंजड़े में बंद कर दिया गया तो वह गा नहीं पाएँगे क्योंकि गीत खुशी में गाए जाते हैं और आकाश में उड़ने वाले पक्षी पिंजड़े में बंद होकर कभी खुश नहीं रह सकते। हम उन्हें सोने के पिंजड़े में रखें तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला। सलाखें चाहे सोने की हो या लोहे की, पर खुशी में फड़फड़ाते उनके पंख तोड़कर हीं छोड़ेंगी। पक्षी यह बात जानते हैं, इसलिए वह कह रहे हैं कि नदियों और झरनों का बहता जल पीने की उन्हें आदत है। सोने के पिंजड़े का खाना पानी उन्हें अच्छा नहीं लगेगा और वह भूखे प्यासे मर जाएँगे। उन्हें तो आज़ाद रह कर कड़वी निबौरी खाना ही पसंद है। गुलामी में मिली सोने की कटोरी की मैदा उन्हें कभी रास नहीं आएगी क्योंकि पराधीनता में मिले व्यंजन कभी स्वादिष्ट लग ही नहीं सकते।

2. *स्वर्ण-शृंखला के बंधन में*
*अपनी गति, उड़ान सब भूले,*
*बस सपनों में देख रहे हैं*
*तरु की फुनगी पर के झूले।*
*ऐसे थे अरमान के उड़ते*
*नीले नभ की सीमा पाने,*
*लाल किरण-की चोंच खोल*
*चुगते तारक अनार के दाने।* (पृष्ठ संख्या-1)

**शब्दार्थ**–***स्वर्ण-शृंखला***–सोने की कड़ियाँ। ***बंधन***–बँधा होना। ***गति***–चाल, वेग, तीव्रता। ***उड़ान***–उड़ने की कला, उड़ने की प्रक्रिया। ***तरु***–वृक्ष, पेड़। ***फुनगी***–सबसे ऊँची टहनी का ऊपरी भाग। ***अरमान***–इच्छा, ख्वाहिश। ***नभ***–आकाश। ***सीमा***–अंतिम छोर। ***चुगना***–एक-एक दाना चोंच से उठाकर खाना। ***तारक***–तारों के समान।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' नामक कविता से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में पक्षियों के माध्यम से परतंत्रता के कष्टमय जीवन से अवगत कराया गया है।

**व्याख्या**–पक्षी कहते हैं कि सोने के पिंजरे में कैद होकर वह अपनी गति और उड़ने की कला सब भूल गए हैं। पहले वह वृक्ष की सबसे ऊपर की टहनी के सिरे पर बैठ कर झूला करते थे। अब यह एक सपना बन कर रह गया है। उनकी इच्छा थी कि वह कभी उड़ते-उड़ते नीले आकाश के उस छोर तक पहुँच जाएँगे, जहाँ वह समाप्त होता है। उनका अरमान था कि किरणों जैसी अपनी लाल चोंच से वह तारों जैसे अनार के दाने चुगेंगे, परन्तु गुलामी के जीवन ने उनके सारे सपनों और अरमानों का गला घोंट दिया है। उनकी खुशियाँ उनसे छिन गई हैं। अब तो वे पिंजरे में बंदी बनकर रह गए हैं।

3. *होती सीमाहीन क्षितिज से*
*इन पंखों की होड़ा-होड़ी,*
*या तो क्षितिज मिलन बन जाता*
*या तनती साँसों की डोरी।*
*नीड़ न दो, चाहे टहनी का*
*आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,*
*लेकिन पंख दिए हैं तो*
*आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।* (पृष्ठ संख्या-2)

**शब्दार्थ**–***सीमाहीन***–जिसका कोई अंत न हो। ***क्षितिज***–वह काल्पनिक स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं। ***होड़ा-होड़ी***–प्रतिस्पर्धा। ***मिलन***–दो या अधिक प्राणियों का मिलना। ***तनती साँसों की डोरी***–मर जाना, प्राण निकल जाना। ***नीड़***–घोंसला। ***आश्रय***–सहारा, ठिकाना। ***छिन्न-भिन्न***–नष्ट। ***आकुल***–बेचैन। ***विघ्न***–व्यवधान, रुकावट।

**प्रसंग**–प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित कविता 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' नामक कविता से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में पक्षी आजाद रहने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं।

**व्याख्या**–इन पंक्तियों में पक्षी कह रहे हैं कि अगर वे आज़ाद होते तो उड़ते-उड़ते आकाश की सीमा ढूँढने निकल जाते। अपने इस प्रयास में या तो वह क्षितिज के आखिरी छोर तक पहुँच कर ही दम लेते या अपने प्राण त्याग देते। पक्षियों द्वारा व्यक्त उनकी इस इच्छा से पता चलता है कि अपनी आज़ादी उन्हें कितनी प्रिय है। पक्षी पुनः विनयपूर्वक कहते हैं कि भले ही कोई उनसे उनका घोंसला छीन ले या पेड़ की डालियों का उनका ठिकाना नष्ट कर दे, लेकिन जब ईश्वर ने उन्हें पंख दिए हैं तो उनके उड़ने का अधिकार उनसे न छीना जाए। उन्हें पिंजड़े में बंदकर उनकी उड़ने की इच्छा को न मारा जाए। उनकी आज़ादी उनसे न छीनकर उन्हें अंतहीन आकाश में उड़ने दिया जाए।

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

### कविता से

प्रश्न 1.
हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?
उत्तर-
हर प्रकार की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते, क्योंकि उन्हें वहाँ उड़ने की आजादी नहीं है। वे तो खुले आसमान में ऊँची उड़ान भरना, नदी-झरनों का बहता जल पीना, कड़वी निबौरियाँ खाना, पेड़ की ऊँची डाली पर झूलना, कूदना, फुदकना अपनी पसंद के अनुसार अलग-अलग ऋतुओं में फलों के दाने चुगना और क्षितिज मिलन करना ही पसंद है। यही कारण है कि हर तरह की सुख-सुविधाओं को पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते।

प्रश्न 2.

पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?

उत्तर-

पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी इन इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं

(क) वे खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं।

(ख) वे अपनी गति से उड़ान भरना चाहते हैं।

(ग) नदी-झरनों का बहता जल पीना चाहते हैं।

(घ) नीम के पेड़ की कड़वी निबौरियाँ खाना चाहते हैं।

(ङ) पेड़ की सब ऊँची फुनगी पर झूलना चाहते हैं।

वे आसमान में ऊँची उड़ान भरकर अनार के दानों रूपी तारों को चुगना चाहते हैं। क्षितिज मिलन करना चाहते हैं।

प्रश्न 3.

भाव स्पष्ट कीजिए-

या तो क्षितिज मिलन बन जाता या तनती साँसों की डोरी।

उत्तर

इस पंक्ति में कवि पक्षी के माध्यम से कहना चाहता है कि यदि मैं स्वतंत्र होता तो उस असीम क्षितिज से मेरी होड़ हो जाती। मैं इन छोटे-छोटे पंखों से उड़कर या तो उस क्षितिज से जाकर मिल जाता या फिर मेरा प्राणांत हो जाता।

Note- Students write and understand the above chapter . I will upload the next chapter 2 in the next content. Be at home be safe .( Mrs Palak Khatri).